1942 के अगस्त क्रांति के दौरान बिहार की सामाजिक संरचना

डॉ० निखिल कुमार

22 मार्च 1912 ई० को बिहार और उड़ीसा एक अलग प्रांत बना। राजनीतिक कूटनीति, संघर्ष, उपेक्षा और जन आंदोलन की कई कड़ियाँ इससे जुड़ी है। आजादी के लम्बे अर्से के बाद सरकारी स्तर पर बिहार के गौरव को लेकर समेकित उत्सव की शुरूआत की गई है। पूरा प्रदेश इस गौरव क्षण का साक्षी है। भौगोलिक स्तर पर जिस भू–भाग को आज बिहार कहते हैं वह भारतीय इतिहास के ज्ञान, अज्ञान, काल से ही समूचे भारत के दिशा–निर्देशन का केन्द्र रहा है। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक भूगोल के निर्धारण का केन्द्र रहा है। सभ्यता का भीतर से होना इसी भू–भाग में संभव हुआ है, जिसे आज बिहार कहते हैं। यदि भारत के प्राचीन इतिहास ही अंधकारमय हो जायेगा। बड़े–बड़े इतिहासकारों ने वैज्ञानिक दृष्टि से भारत का जो इतिहास लिखा है, वह बिहार के इतिहास से ही प्रारंभ होता है। वह ऐतिहासिक युग बौद्धकाल कहलाता है, तब से लेकर डेढ़ हजार वर्ष तक बिहार की बड़ी धाक रही है। कई सम्राटों के समय तो समस्त भारत ही बिहार यानि मगध के अधीन रहा। आधुनिक भारत के इतिहास में भी बिहार का यथेष्ठ गौरव है।